शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

शब्दब्रह्म के पांच वर्ष

पुष्पेन्द्र दुबे

इस अंक के प्रकाशन के साथ ही 'शब्दब्रह्म' को पांच वर्ष पूर्ण हो गए हैं। मित्रों से विचारविमर्श के बाद 'निराकार' शब्दब्रह्म ने शोध पत्रिका के रूप में 'आकार' लेना प्रारंभ किया। विकासमान तकनीकी सभ्यता में भारतीय भाषाओं में शोध पत्र लेखन को बढ़ावा देने के शुभ संकल्प के साथ 17 नवंबर 2012 को शब्दब्रह्म का प्रथम अंक इंटरनेट पर अपलोड किया गया। शब्दब्रह्म को आईएसएसएन प्राप्त हुआ। सभी भारतीय भाषाओं के शोध पत्रों का प्रकाशन देवनागरी लिपि में करने के आग्रह का प्राध्यापक, शोधार्थी और साहित्यकारों ने स्वागत किया। यद्यपि जो शोध पत्र क्षेत्रीय भाषाओं के शोधार्थियों ने उनकी लिपि में भेजे, उन्हें भी शब्दब्रह्म ने सहर्ष स्वीकार कर उनका प्रकाशन किया, इसमें गुजराती और उर्दू मुख्य है। अंग्रेजी भाषा के शोध पत्रों को भी शब्दब्रह्म में शामिल किया गया। शब्दब्रह्म का उद्देश्य शोधार्थियों को शोध चेतना संपन्न बनाना है। इसके लिए शब्दब्रह्म ने दो राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियां आयोजित कीं। प्रथम शोध संगोष्ठी महाराजा रणजीतसिंह कालेज आफ़ प्रोफेशनल साइंसेस के सहयोग से और द्वितीय शोध संगोष्ठी तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाल, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के तत्वावधान में संपन्न हुईं दोनों शोध संगोष्ठियों को साहित्यकारों और शोधार्थियों का उचित प्रतिसाद मिला। शब्दब्रह्म में प्रकाशित शोध पत्र आनलाइन स्तर पर अनेक जगह संदर्भ के रूप में प्रदर्शित हुए हैं। शब्दब्रह्म में प्रकाशित शोध पत्र गूगल स्कालर पर प्रमुखता से उपलब्ध हैं। विगत पांच वर्षों की यात्रा का सिंहावलोकन करने पर पता चलता है कि शब्दब्रह्म में कला एवं मानविकी संकाय, बौद्ध अध्ययन, समाज विज्ञान संकाय, वाणिज्य एवं प्रबंध संकाय, शिक्षा संकाय, विधि संकाय और गृह विज्ञान संकाय में अब तक 625 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। आप सभी के सहयोग के बिना यह संभव नहीं था।

शब्दब्रह्म ने **'सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि'** का संकल्प लिया है। हिंदुस्तान की एकता के लिए देवनागरी लिपि अधिक काम देगी। इसका आशय यह कदापि नहीं है कि प्रचलित लिपि छोड़ दी जाए। वह भी चले और नागरी लिपि भी चले। इससे बहुत लाभ होगा। भारत की अन्य भाषाओं में होने वाले शोध देवनागरी लिपि में लिखने से पूरे देश के शोधार्थी और अध्येता लाभान्वित होंगे। इससे दूसरी भाषा सीखने में सहायता भी मिलेगी।

इस बात को विनोबा जी के शब्दों में रखें तो नागरी लिपि के पांच उद्देश्य हैं : दक्षिण की चारों भाषाएं नजदीक आयें, सारा उत्तर भारत एक हो जाये, दक्षिण और उत्तर भारत एक हो जायें, भारत और एशिया एक हो जायें, भारत और विश्व एक हो जायें। जब लिपि का स्वीकार होगा, तब नागरी लिपि में सुधार भी होगा। इतने व्यापक विचार को धरातल पर उतारने में ईश्वर हमारी सहायता करेगा, ऐसी आशा है।

शब्दब्रह्म के पाठकों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों, और साहित्यकारों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।